

वैदेही

मैथिली क सर्वोत्तम मासिक



वैदेही

[बिहार सरकार द्वारा स्कूल, कालेज एवं पुस्तकालयक हेतु स्वीकृत]

सम्पादक

प्रो० श्रीसुरेन्द्रभा
'सुमन'

भासुधांशु 'शेखर'
चौधरी

प्रो० श्रीकृष्णकान्त
मिश्र

एक प्रति २५

विशेषांक ५०

वार्षिक ३)

आजीवन ५१)

संरक्षक १२५)

श्रीकृष्णकान्तमिश्र

द्वारा दरभंगा प्रेस

कम्पनी (प्रा०) लि०

दरभंगामे मुद्रित

एवं प्रकाशित

प्राप्ति-स्थान

वैदेही समिति,

लालबाग, दरभंगा

कथा-पिहानी

पद्म आकका

ठगना

बौक

स्व० विनोदानन्दभा १४३

श्रीप्रमोदनाथभा १४७

श्रीराय १५४

आलोचना-लेख

सहर्षा जिलाक इतिहास

सर्वोदय

मौलाना आजाद

शक्तिक उपासना

श्रीहितनारायणभा १२५

श्रीललितमोहनभा १४६

कुमारश्रीवैद्यनाथचौधरी १३५

श्रीश्यामानन्दभा १४०

कविता

आशा

ग्रामदेव

लूसी ग्रे

'आजाद'

श्रीमती 'लीला' १३७

श्रीहरेकान्तभा १३८

बडस्वर्थ १३७

श्रीमहारुद्रनारायणभा १४७

मुख-चित्र: मैथिली साहित्यक वयोवृद्ध साहित्यकार बाबूश्रीन्द्रप्रतिसिंह : पचही
ड्योढ़ी जनिक मूक सेवा सर्वावदित अछि । एहन कतेको मैथिली विद्वान् अइओ
मिथिला आर बाहरमे भेटताह ।

निवेदन

(१) जाहि ग्राहक महोदयकेँ जाहि मासक अंक नहि प्राप्त होइन्ह से ओही
मासक २० तारीख धरि अपन डिलेभरी पोस्ट-आफिससँ प्रमाणित आवेदन-
पत्रके कार्यालयमे समुचित कार्यवाहीक हेतु पठा देथि ।

(२) शीघ्र पत्रोत्तरक हेतु ग्राहक सभ पैकेट पर लिखल अपन ग्राहकसंख्या
अवश्य लिखथि अन्यथा उत्तरमे विलम्ब हैब अनिवार्य ।

—मन्त्री, वैदेही समिति, दरभंगा

दुब्बर-मोट

प्रो० श्रीजयमन्तमिश्र, एम्० ए०, व्याकरण - साहित्याचार्य

चिरकालहिंसँ भूमण्डलपर चल अवैत अछि दुब्बर-मोट ।
 एक देखि दोसर के, मनमे कहि उठैछ ई निर्दय, छोट ॥
 की निदान अछि एकर एहिमे व्यग्र अनादि समय सँ विज्ञ ।
 अपन-अपन बुद्धिक अनुसारें कहि निदान, छथि भेल अभिज्ञ ॥
 विधि हाथक तनु लेखनीक बल, बनल प्रथम दुब्बर सब लोक ।
 भोंध लेखनी बल अछि निर्मित मोट सोंट धोधिगर ई लोक ॥
 अथवा पूर्व जन्म कय दुष्कर तप, कृशतनु, ई सम्प्रति मोट ।
 मौज बहुत कयलन्हि पूर्वहि ई तँ छथि सम्प्रति दुर्बल छोट ॥
 अथवा राजनीति सम्बन्धी कठिन अखाड़ापर ई जाय ।
 पटकल दाव पेंच सँ दुर्बल, विचरथि ई लय मोटगर काय ॥
 'हरदो' वाजि चलल जे लाजें भेल परम दुर्बल कृश गात ।
 विविध कष्ट के सहि, सहैत अछि स्थूल जनन ओ मोटगर बात ॥
 अथवा मील-चक्रमे पोसल सिट्ठी बनल करय कृश हाय ।
 चिन्ती खाय मोल मालिक सब मोटगर बैसल टोप लगाय ॥
 अथवा कुन्यवस्थाक चकरीमे पोसल मध्यम वर्गक गात ।
 दुब्बर अछि, आ मोट भेल अछि आनक ओकरे ऊपर गात ॥
 अथवा 'चाइली' पावि, मधुर फल खाय भेल अछि बहुत मोट ।

जकरा नहि अवसर ओ, से अछि

दीन हीन आ अतिशय छोट ॥

बनि अति मोट, बनल अछि शीघ्र

गाम गाम मुखिया सरपञ्च ।

दुब्बर ताकि रहल कनडेरिये

करय परस्पर त्वञ्चाहञ्च ॥

दुब्बर-मोट कथा कहलहुँ अछि,

सुनल हैत, ई बहुत पुरान ।

नहि केवल हमहीं जनैत छी,

अहाँ कहू क्यो दोसर आन ?

श्रीहितनारायणभा

सहर्षा जिलाक इतिहासक साँस्कृतिक पृष्ठ-भूमि

बिहार प्रान्तक जिला सबहिक मध्य 'सहर्षा' एक नव निर्मित जिला अछि । एहिमे सुपौल, मधेपुरा आ सहर्षा तीन सबडिविजन अछि । ई ओही मिथिलाक पूर्वीय भूभाग थीक जे आदिकालहिसँ आर्य-सभ्यतामे सर्वश्रेष्ठ केन्द्र मानल जाइछ जतय भारतवर्षक भिन्न-भिन्न प्रान्तसँ पण्डित तथा विद्यार्थी लोकनि अपन ज्ञान-पिपासाकेँ शान्त करक लेल अबैत छलाह आ' न्याय-दर्शन, मीमांसा, सांख्य योग, वेदान्त, साहित्य ओ गणितक अन्तिम शिक्षाक हेतु एहिठाम ऐबामे अपनाकेँ कृतार्थ बुझैत छलाह ।

बिहार प्रान्तक जिला सबहिक मध्य 'सहर्षा' एक नव निर्मित जिला अछि । एहिमे सुपौल, मधेपुरा आ सहर्षा तीन सबडिविजन अछि । ई ओही मिथिलाक पूर्वीय भूभाग थीक जे आदिकालहिसँ आर्य-सभ्यताक सर्वश्रेष्ठ केन्द्र मानल जाइछ जतए भारतवर्षक भिन्न-भिन्न प्रान्तसँ पण्डित तथा विद्यार्थी लोकनि अपन ज्ञान - पिपासाकेँ शान्त करक लेल अबैत छलाह आ' न्याय, दर्शन, मीमांसा, सांख्य, योग वेदान्त, साहित्य ओ गणितक अन्तिम शिक्षाक हेतु एहिठाम ऐबामे अपनाकेँ कृतार्थ बुझैत छलाह । अतः सहर्षा जिलाक इतिहास हमरा मिथिलाक जाज्वल्यमान अतीतक स्मरण करबैछ । एहि जिलाक पूबरिया सीमापर पूर्णियाँ जिला अछि ।

ई कौशकी क्षेत्र थीक । कौशकी नदीक निर्मम, निष्ठुर एवं भयंकर अभि-शापक कथा एतहि सुरक्षित अछि । ई क्षेत्र यद्यपि विध्वंसकारिणी कोशीक आतंकमय आक्रमणसँ जर्जर रहल अछि तथापि एहिठाम इतिहास अनुशीलनक परिपाटी आ' साहित्य-सृजनक श्रृंखला नहि टूटल । कोशी-साहित्यक सृजन-कर्त्ता श्रीललितेश्वरमल्लिकजीक कोशी सम्बन्धी प्रतिभाक विकासक संगहि एतय कवि, लेखक, कलाकार आ' जिज्ञासुक संख्या दिनानुदिन बढ़ि रहल अछि । एक पाश्चात्य कवि शेली (Shelley)क निम्नांकित कविता अक्षरशः चरितार्थ-होइछ जे

What they learn in suffering
They teach us in song

कहक तात्पर्य ई अछि, जे एहिठामक कवि, कलाकर ओ इतिहासकार दुख-
यंत्रणक जटिलतामे जे किछु सीखि पौलन्हि तकरा अपन स्वरमे घर-घर,
पहुँचबैत छथि ।

ऐतिहासिकताक दृष्टि सहरा जिलामे बहुतो महत्वपूर्ण स्थान अछि । ओहि
सभ स्थानक मध्य सर्वप्रथम हम 'हरदीक' उल्लेख करइत छी । ई सुपौल
सँ प्रायः तीन कोस पूब अछि । ई वैह स्थान थीक जतय 'प्राक् विद्यापति-
युग'मे 'लोरीक मणियार' बारह वर्ष धरि निवास कयने छलाह आ जनिक
स्थापित कैल ओहिठाम दुर्गा छथि । हरदीक दुर्गास्थान एखनहुँ एक उग्र स्थान
अछि आ ओहिठाम लोरिकक डोह अछि ।

लोरिक गौड़ देशवासी छलाह । हुनक जन्म एक गोपकुलमे भेल छलैन ।
ओ परम बलिष्ठ आ प्रतापी छलाह । हुनक आकृति भीमक आकृतिसँ
सादृश्य रखैत छलैन्ह । प्रस्तुत सामिग्रीक आधारपर हुनक समय एगारहम
शताब्दी मानल जा सकैछ किंयैक तँ ज्योतिरीश्वर ठाकुरक वर्णरत्नाकर जे
तेरहम शताब्दीक थीक, ओहूमे लोरिकक विषयमे कहल गेल अछि ।
लोरिक युवावस्थामे अपन वीरता ओ प्रभुत्वक परिचय दैत मालदह जिलासँ
प्रस्थान कए विहारक 'आरा' जिला धरि पहुँचि बहुतो ठाम लड़ाइमे विजय
लक्ष्मीक कृपादृष्टि प्राप्त करैत अपन स्त्री 'चनाइनक' संग हरदी मे आवि बसि
गेलाह । हुनक माम छलथिन्ह राजा अंगार, जनिक डोह बहेड़ामे छैन्हि ।
हालहिमे ओहिठामक एक मुद्रा पौल गेल अछि सम्प्रति ओ मुद्रा प्रोफेसर
राधाकृष्णचौधरीजीक संग छैन्हि जे लोरिकक समयक थीक । एहि सम्बन्धमे
मैथिलीक एक सुप्रसिद्ध लेखक ओ कवि डाक्टरश्रीब्रजकिशोरवर्माजीसँ
विशेष बातक वात्ता भेटि सकैत अछि । लोरिकक स्त्री 'चनाइन' परम सुन्दरि
छलथिन्ह, जे पहिने एक रानी छलीह; परञ्च ओहि प्रसंगक उल्लेख एहिठाम
नहि कएल जाइछ । हम हुनक हरदीक अतीतक इतिहासकमे लोरिकक
धर्मपत्नी रूपमे देखैत छी—जतए हमरा दाम्पत्य-प्रेमक पराकाष्ठा परि-
लक्षित होइछ ।

लोरिक, मैथिली भाषामे वीर काव्य (Ballads) क सृजन कयने छलाह ।
हुनक कविता केँ 'लोरिकाइन' कहल जाइछ । ओहि कविता सबहिक संग्रह-

कर्त्ता प्रयास एखन सहर्षा जिला मैथिली साहित्य परिषद् दिशिषँ भै रहल अछि । हुनक कविताक पूर्णरूपेण संग्रह ओ संकलन मैथिली भाषाक प्राचीनता ओ स्वरूप पर एक दिव्यालोक निक्षेप करत । उदाहरण स्वरूप हुनक किछुएक पंक्ति एतए प्रस्तुत करैत छी :

पूरुब हम सिंघेसर पूजब,

पच्छिम देवन—थान ।

उत्तरमे बाराहनाथ अरु

दक्षिण बैजनाथ ॥ ।।

“हरदीक चौधारा” जतए लोरिक रहैत छलाह ओहिठामसँ तीन कोस सुप्रसिद्ध सिंघेश्वरस्थान अछि जतए प्रतिवर्ष शिवरातिक अवसरपर भारत वर्षक भिन्न-भिन्न प्रान्तक यात्री लोकनि सिंघेश्वरनाथक पूजा करक लेल अबैत छथि । एतए ओहि अवसरपर बड़ पैघ मेला लगैत अछि जाहिमे हजारो हाथी, घोड़ा, बड़द आदि तथा नाना प्रकारक वस्तु विक्रयक हेतु अबैत अछि । सिंघेश्वरनाथक स्थापना शृंगी ऋषि कयने छलाह जकर उल्लेख हमरा शास्त्र-पुराणमे भेटैत अछि । देवन-वनक महादेव हरदीसँ पश्चिम लगभग दस कोसपर छथि । देवनक थान एक उग्र स्थान अछि । ओहिठामक महादेवकेँ एहि परोपद्राक “देवना महादेव” कहैत छैन्हि ।

लोरिकक कविता एखनहुँ एहि जिलामे गोप सबहिक मध्य लोक-गीतक-रूप मे प्रचलित अछि जे ठाम-ठाम बूढ़-पुरान लोकक मुँहसँ सुनैत छी । उपर्युक्त कविताक भाषा मैथिली थीक । एहिमे जे ‘पुरुब’ शब्दक प्रयोग अछि तकरा स्थानपर सम्प्रति ‘पूब’ आ ‘बैजनाथक’ स्थानमे ‘बैद्यनाथ’ शब्दक प्रयोग कयल जाइछ, एकर अतिरिक्त आओर विशेष अन्तर नहि देखैत छी; परञ्च ई बात केँ स्वीकार करए पड़त जे हुनक लोरिकाइनक भाषा अपभ्रंश मैथिली थीक । हरदीसँ प्रायः पन्द्रह मील उत्तरमे गणपतिगंज धरहरा अछि जतए राजा ‘कामरूप’क अतिप्राचीन तथा विशाल गढ़क भग्नावशेष अछि । ओहि विशाल राजगढ़क भग्नावशेष एखनहुँ बहुत दूर धरि पसरल आ ओकर लगहिमे राजा कामरूपक स्थापित कैल कामेश्वर - महादेव छथि, जनिका लोक सब भीमनाथ सेहो कहैत छैन्हि ओ जनिक जीर्णोद्धार पं० त्रिलोकनाथ मिश्रजी कयने छथि ।

सहर्षा जिलाक धरहरा थानामे कन्दाहामे एक अत्यन्त प्राचीन डोह अछि आ' ओहिठाम 'बालादित्य' (सूर्य) हुनका लोक सच भवादित्य सेहो कहैत छैन्ह । ओहि मन्दिरमे सूर्यक पाथरक मूर्ति अछि आ' ओहिठाम जे अक्षर अंकित अछि ओकरा पढ़ि कए अनुसन्धान केनिहार एक व्यक्ति ई सिद्ध कयने छथि जे तेरहम शताब्दीमे ओहिठाम एक राजगढ़ छल आ' ओहि समयक ई मन्दिर । जकर स्थापना ओइनवार वंशक राजा नरसिंहदेव कयने छलाह । एकर अतिरिक्त बलगाँवसँ उत्तर ओ लालगंजक दक्षिण एक अति-प्राचीन गढ़क भग्नावशेष अछि जाहिठाम वागेश्वर महादेव छथि किम्बदन्ती अछि जे बाणासुरक स्थापित ओ महादेव थिकाह । पंचगछिया सँ पश्चिम "गंगौरा-डोह" अछि । एकरा सम्बन्ध मे कहल जाइछ जे ई "गंगसिंह देव"क डोह थिकैन्हि गंगसिंहदेव हरसिंहदेवक पितामह छलाह । पंचगछियासँ पूब रामपुर डोहक विषयमे कहल जाइछ जे ई रामसिंहदेवक डोह थिकैन्हि जे हरसिंहदेवक बाद तेसर पीढ़ीक राजा छलाह । नान्य - वंशक संस्थापक छलाह महाराजा नान्यदेव जे कर्णाट देशक निवासी परमर (पमार) क्षत्रिय वंशक छलाह । यवन लोकनिक अत्याचारसँ पीड़ित भै ई एहि देश मे अयलाह ओ मिथिला आ' नेपालकेँ जीति लेलैन्हि । हिनका नाम पर एखनहुँ मुजफ्फरपुर जिलाक कोइली-नानपुर नामक गाँव अछि । नान्य-देवक मिथिला - राज्य - प्राप्तक विषय मे एक अद्भुत कथा प्रचलित अछि — जकरा सम्बन्धमे निम्नांकित श्लोक अछि :

रामो वेत्ति नलो वेत्ति वेत्ति राजा पुरुरवाः ।

अलर्कस्य धनं प्राप्य नान्यो राजा भविष्यति ॥

आलमनगर थानाक गंगापुर ओ धरमपुर प्रगन्नाक 'मल्हडोहा' गंगसिंहदेव ओ मल्लसिंहदेवक नाम पर एखनहुँ विराजमान अछि; एकर अतिरिक्त सहर्षा जिलामे बलाक - डोह, लूटना-डोह, बीना-डोह, सिकलीगढ़ धरहरा, बराँटपुर तथा 'पतरबट' आदि बहुते स्थानक ऐतिहासिक महत्व छैक, महिषी परसरमा तथा बड़गाँव तँ अपन ऐतिहासिक सत्ताक संगहि आध्यात्मिक ओ सांस्कृतिक महत्वक लेल मिथिलाक इतिहासमे सब दिनुक हेतु गौरवान्वित रहत; कियै तँ महिषीक पवित्र - भूमिमे मण्डन मिश्र तथा हुनक धर्म-

पत्नी भारतीक विमल विभूति मिश्रित अछि आ परसरमाक अंचलमे मिथिलाक एक संतकवि लक्ष्मीनाथ गोसाँइक प्रादुर्भाव भेल छलैन्हि ।

परसरमा सुपौलसँ आठ मील दक्षिण अछि । संतकवि ओ सिद्धयोगीराज लक्ष्मीनाथ गोसाँइ परसरमा गामक वासी मैथिल ब्राह्मण छलाह । जखन ई नेना छलाह तखन कहिओ काल पिताक आज्ञासँ गाय चरेबाक हेतु बाध बोन जाइत छलाह । ओहि कालमे ई विनोदार्थ ओतए हठयोगक क्रिया सभ करैत छलाह एहिसँ ई सिद्ध होइछ जे पूर्वजन्महुँमे ई योगी छलाह । यज्ञोपवीत भेलापर दुहबी महिनाथपुरक श्रीरतमासँ ज्योतिष पढ़य गेलाह । थोड़बहि दिनमे ई एहिमे पूर्ण विद्वता प्राप्त कयलैन्हि आओर तकर बाद वेदान्त पढ़य लगलाह, किछु दिनुक पश्चात् ई एक पैघ वेदान्ती भै गेलाह । योग्य बयस्क भेलापर कहुआ ग्रामक सोखादत्त ठाकुरक कन्यासँ हिनक विवाह भेलैन्हि । विवाहक दुइये वर्ष पश्चात् धरि ई घरमे रहलाह कियैक तँ वेदान्त आ' योग क बिषय हिनका हृदयकेँ बदलि देलकैन्हि जकर फलस्वरूप ई घर छोड़ि नेपालक तराइमे पहुँचला । ओतए भ्रमण करैत काल हिनका गुरु गोरखनाथक शिष्यसँ भेट भेल । आ हुनकहिसँ ई योगक शिक्षा प्राप्त कयलैन्हि तदुपरान्त हिनक गुरुगोरखनाथहुसँ भेट भेलैन्हि ।

सन्त होइतहु ई एक पैघ-कवि छलाह । हिनक बनाएल हजारो भजन मैथिली आ' हिन्दी-भाषामे अछि जकर एखन धरि समुचित संकलन ओ प्रकाशन नहि भेल अछि । हिनक अधिकांश कविता आध्यात्मवादी-भावनासँ समन्वित अछि । हिनक प्रसिद्ध - कुटी सम्प्रति वनगाँवमे विराजमान छैन्हि । हिनक शिष्य छलथिन्ह श्रीरघुनरदासजी । बरियाही-कोठीक जानसाहैबसँ हिनका मैत्री छलैन्हि । सहर्षा-जिलाक परसरमा नामक गाँव मे एखनहुँ हिनक वंशज निवास करैत छथि आ' वनगाँव कुटीमे बरोवरि हिनक पूजा-पाठ होइत छैन्हि । हिनक कविताक किछु अंश उदाहरणक लेल एतय प्रस्तुत कयल जाइछः

१

कुञ्ज कुटीरे बट तट धीरे बिहरत मदन मुरारी ।

संग सचूटी गोप-बधूटी हरि भुजतल-त्रिपुरारी ॥

गीरि समीपे विकशित भीपे नृत्यत नटवर मानं ।
पीत वसन तन श्याम पटल घन गोपसखा कृतगानं ॥

२

सरसिज फूले यमुना कूले गुञ्जत मधुरिप जालं ।
वंशी हेरत हँसि मुख फेरत विशद विमल उर मालं ॥
शीत समीरे बहति गंभीरे सुमन-मोद विस्तारे ।
कुण्डल लोलं मुकुट अमोलं चंचल-दृग रतनारे ॥

३

राजिंत विपिने दशदिशि दिपने गो-द्विज देव हुलासं ।
युवती संगे रसिक त्रिभंगे वृन्दावन कृतवासं ॥
श्रीपति चरणे अशरण शरणे तरणि सकल श्रुतसारं ।
लक्ष्मीपति जन परम विकल मन कुरु भवसागर पारं ॥

एहि पद्यके देखितहि जयदेवकविक गीतगोविन्दक वसन्तवर्णन निम्नांकित-
श्लोकक स्मरण भय जाइछः

ललित लवंगलतो परिशीलन कोमल मलय समीरे ।

मधुकर निकर करम्वित कोकिल कूजित कुञ्ज कुटीरे ॥

विहरति हरिरिह सरस बसन्ते ॥

नृत्यति युवति जनेन समं सखि ।

विरहि जनस्य दुरन्ते ॥

लक्ष्मीनाथगोसाँइक कविता भक्तिकालीन कवि लोकनिक कोटिमे छैन्हि
से देखूः

आशा ना काहू की करिये ।

आशा साँपिनि फिरत जगतमे सुख निराश भै रहिये,

जाको डसत बचत नही सोई कोटि यतन करि मरिये ।

आशा सम नहि दुःख जगत मे सुख निरास कै रहिये,

लक्ष्मीपति धरि देह मृगा को राम चरण चित लहिये ॥

कविताक केहन प्रांजल प्रवाह अछि—जेहने गंभीर भाव-भूमि अछि, ओहने
कल-कल गतियो । शोकसपियर तीके कहने छथि जे

Smooth runs the water,

Where the brook is deep

सहर्षा जिलाक सांस्कृतिक विकासमे सभ दिनसँ स्त्रिगण सहयोग सामान रूपहि सँ रहलैन्हि अछि ।

बालब्रह्मचारी आचार्यशंकर शास्त्रार्थमे सभठामसँ विजय प्राप्त करैत जखन महिषी पहुँचि मंडनमिश्रक घरक खोज कयने छलाह, तखन एहिठामक एक पनिभरनी निम्नांकित श्लोकमे हुनका मंडनमिश्रक घरक संकेत करैत आश्चर्यचकित कैने छलैन्हि:

स्वतः प्रमाणं परतः प्रमाणं,

शुकांगना यत्र गिरो गिरन्ति ।

शिष्योपशिष्यैरुपगीयमानं,

अवेहि तन्मंडनमिश्रधाम ॥

शंकराचार्यकेँ अहूसँ बाढ़ि स्मिय अरुणोदयकालमे भेलैन्हि जखन ओ प्रातः कृत्य करैत छलाह आ' कौआक काँव-काँवसँ आकृष्ट भै हुनका मुँहसँ ई श्लोक बहरेलैन्हि जे

वयं काकाः वयं काकाः

इति जल्पन्ति वायसाः

अर्थात् एहि प्रभातकाल मे कौआ सभ जोर-जोर सँ कहने फिरैछ जे हम कौआ थिककहु—हम कौआ थिकहु । एक पनिभरनी एकरा पूर्ति करैत उत्तर देलकैन्ह जे

तिमिरास्तिमो हन्ति इति शंकित मानसाः

ओ कहलकैन्हि जे एखन सूर्य अपन किरण-वाणसँ अन्धकारकेँ बिनष्ट कै रहल छथि ताहिँसँ एहिठामक कौआ सभ पूर्ण संशंकित अछि जे हमरहु लोकनिक रंगकारी अछि—जौं अन्धकारक भ्रमसँ सूर्यक प्रहार हमरहु सभ पर भेल तँ अनर्थ हैत—तेँ ओ सब जोर - जोरसँ वाजि अपन परिचय दैछ । एहि श्लोकसँ ई प्रत्यक्ष रूपेँ ज्ञान होइछ से एक समय छल, जखन हमर संस्कृति, हमर साहित्यिक ज्ञान तथा हमर मानसिक विकास उन्नतिक सर्वोच्च शिखरपर छल । अहा ! कतेक कला-प्रियता छल एहि पावन क्षेत्रक

महिलामे ! एतवे नहि, हुनका लोकनिक पाण्डित्यक पराकाष्ठा हमरा ओ मंडनमिश्रक धर्मपत्नी भारतीसँ जगद्गुरु शंकराचार्यकेँ परास्त होवाक काल भेटैत अछि ।

आब हम सहर्षा जिलाक 'कड़मा' नामक गाँवक एक चर्चा करैत छी । ई आलमनगर थानामे अछि । एतहि ओ उदयनाचार्य भेल छलाह, जिनिक लिखल अनेको गंभीर ग्रन्थ अछि । उदयनाचार्यक वंशज एबनहु कड़मामे निवास करैत छथि ओ ई लोकनि आचार्य कहवैत छथि । 'कड़मा'सँ थोड़बहि दूरपर 'गमैल' अछि—जतए पं० अयोध्यानाथ मिश्र भेल छलाह जे अनेकानेक पुस्तक रचना कयने छलाह ओ जे मिथिलाक एक सुप्रसिद्ध पं० चुम्बेभाकेँ शास्त्रार्थमे परास्त कय श्रीमानमिथिलेशसँ पुरस्कार रूपमे एक दोशालाक अनुमति प्राप्त कयने छलाह । ई शास्त्रार्थ दरभंगा जिलाक 'भौर' नामक गाममे भेल छल । एक दोशालाक जवन 'मुसरी भा' नामक एक दरबारी निन्दाक कए हुनका दोशाला देव बन्द करा देलथिन्ह तखन ओ निराश भै अपना गाम कै घुरलाह आ' एहि सम्बन्धमे बाटहिमे जे किछु मैथिली-पद्यक रचना कयने छलाह तकर दुइ पंक्ति जे उपलब्ध भ सकल अछि जे एतय प्रस्तुत कयल जाइछ:

हुनक नहि दोष छन्हि किछुओ

हमर फूटल कपारे अछि ।

सम्पूर्ण कविताक आशय ई अछि जे, हम मिथिलेशक दोष किछुओ नहि दए सकैत छी । हमर कपार फूटल अछि अर्थात् हम अभाग ज तेँ हमर नवे दोशाला केँ मूस काटि देलक ।

आब हम सहर्षा जिलाक बड़गाँव तथा बनगाँवक उल्लेख करैत छी जकरा मिथिला-भाषा रामायण महाकाव्यक सृजन-कर्ता कविवर चन्दा भा, जे मैथिली-साहित्यक आधुनिक युगक वाल्मीकि कहल जाइत छथि तथा प्रसिद्ध-कवि छत्रनाथ भा ओ द्विजवर छेदीभाकेँ प्राप्त करवाक सोभाग्य छैक । यद्यपि कविवर चन्दाभाक जन्म १८० ई०मे दरभंगा जिलान्तगत पिडारुछ गाँवमे भेल छलैन्हि तथापि नेनाहि अवस्थामे वालोचित शिक्षा प्राप्त कए ओ अपन मातृक बड़गाँव चल ऐलाह आ' यथासमय व्याकरण, न्याय, साहित्य, दर्शन, योगादिक पूर्ण अध्ययन कए प्रतिभा सम्पन्न भेलाह; अतः चन्द्र काविक संग सहर्षा जिलाक सम्बन्ध सभ अनुएग रहत कविवर चन्दाभा एक पैघ प्रकृति-प्रेमी-कवि छलाह—एहिमे सन्देह नहि । छत्रनाथभा ओ पण्डित छेदी भा द्विजवर ओ पं० बलदेवमिश्रजी तँ बनगाँवक गौरवकेँ सभदिनुक लेल मैथिलीक काव्य-गगनमे ऊँच रखताह । एहिठाम हम पं० छेदी भा द्विजवरक अग्र-गीतक एक अंश प्रस्तुत करइत छी :

हे जलधर ! चल जाउ ततय भट,
 बसथि जतय नन्दलाला ।
 करबनि विनय एहन कए नबि कए,
 आबथि शीघ्र कृपाला ॥
 जँ भट दए मोहन नहि ओता,
 करता निमिष अभेला
 तँ ब्रजमे एकौ नहि छेदी,
 बचती विरहिन—बाला ।

उपर्युक्त कवितापर दृष्टिपात करितँहि हमरा मेघदूत - काव्यक ओहि स्थलक स्मरण भै जाइछ जतए विरही-यक्ष मेघ द्वारा अपन प्रेयसोकेँ सम्वाद पठ-
 बैत छी—अन्तर एतबे अछि ओतए सम्वाद पठौनिहार 'यक्ष' छलाह आ'
 एतय गोपी छथि—मेघ तँ दूहूठाम सम्वाद—वाहक छथिये । एतय जे कवि
 निमिष शब्दक प्रयोग कयने छथि ओ एक मार्मिक प्रयोग कहल जा सकैछ;
 कियैकतँ एहि सँ गोपीलोकनिक विरहक पराकाष्ठा परिलक्षित होइछ ।

सम्प्रति एहि जिलाक साँस्कृतिक विगसक बहुतो साधन अछि—जेना दुइ
 डिग्री—कालेज, लगभग पचीस उच्च विद्यालय, अनेकानेक पुस्तकालय, दुइ
 —उच्च बालिका—विद्यालय, संस्कृत—विद्यालय, बेसिक—ट्रेनिक—कालेज
 तथा स्कूल, संगीतालय, जिला हिन्दी—साहित्य-सम्मेलन तथा जिला
 मैथिली-साहित्य-परिषद्, संगीत कलाक दृष्टिसँ तँ सहर्षा-जिलाक पंचगछिया
 संगीतक केन्द्र छल—जकर श्रेय स्वर्गीय रायबहादुर लक्ष्मीनारायण सिंहजोकाँ
 छलैन्हि । स्वर्गीय 'मागन'क संगीतक मधुर-निनाद एखनहुँ हमरा
 लोकनिक काजसँ विलीन नहि भेल अछि आ' ओहि संगीतक केन्द्र-विन्दु
 पर गायक-चूड़ामणि श्रीरघुभा बरोबरि अपन मधुरालापसँ ओहि दिवंगत
 आत्मा सभकाँ श्रद्धाञ्जलि अर्पित करैत छथि ।

लेखन तथा प्रकाशनक दृष्टिकोणसँ सहर्षा जिला प्रगतिशील अछि; कियैक
 तँ एम्हर पाँचवर्षक भीतर लगभग एक सँ मैथिली-साहित्यक, हिन्दी-
 साहित्यक ओ इतिहासक पुस्तक प्रकाशित भेल अछि आ' अप्रकाशित पुस्तकक
 संख्या सेहो एहिसँ कम नहि अछि । एहि नवीन प्रकाशनक मध्य मैथिली-
 साहित्यक निम्नांकित पुस्तक बिहार ओ पटना विश्व-विद्यालयक पाठ्यक्रममे
 स्वीकृत अछि:

(१) गप्प-शप्प विवेक—लेखक—पं० बलदेवमिश्रजी बनगाँव-बिहार विद्या-
 लयक आर्क्ष. ए.क पाठ्यक्रममे स्वीकृत ।

(२) मैथिली-गद्य-पुष्पाञ्जलि—लेखक - पं० हितनारायण झा—बभनगामा (सुपौल) पटना विश्वविद्यालयक आइ. ए. क पाठ्यक्रममे स्वीकृत ।
(२) कविवर चन्दा झा ओ वर्ड्सवर्थक प्रकृति-प्रेम—लेखक पं० हितनारायण झा—बभनगामा (सुपौल) बिहार विश्वविद्यालयक बी. ए. क पाठ्यक्रममे स्वीकृत ।

(३) दिग्दर्शन—लेखक पं० हितनारायण झा बभनगामा (सुपौल) बिहार विश्वविद्यालय क बी. ए. आनर्सक पाठ्यक्रममे स्वीकृत ।

(४) कविवर चन्दा झा ओ वर्ड्सवर्थक प्रकृतिक प्रेम—लेखक पं० हितनारायण झा—पटना विश्वविद्यालयक एम. ए. (Special Study) क पाठ्यक्रममे स्वीकृत ।

मैथिलीक अतिरिक्त प्रोफेसर राधाकृष्ण चौधरीजीक तीन गोटा इतिहासक पोथी बिहार विश्वविद्यालयक आइ. ए., बी. ए. तथा बी. ए. आनर्सक पाठ्यक्रममे स्वीकृत छैन्हि ।

स्वर्गीयश्रीपुलकितलाल दास 'मधुर' एहि जिलाक एक पैव मैथिली-साहित्य-सेवी छलाह । आलमनगरक स्वर्गीय गोपी महाराज ओ मनमोहन महाराज ब्रज - भाषामे उच्चकोटिक कविता लिखैत छलाह जनिक रचना सभ एखन धरि अप्रकाशिते अछि । एहि जिलाक कवि, लेखक ओ इतिहासकारक मध्य निम्नांकित व्यक्तिक नामक उल्लेख करब आवश्यक अछि

१. पं० छेदी झा - द्विजवर २. पं० बलदेव मिश्र ३. पं० हितनारायण झा ४. श्रीकृष्णवल्लभलालदास, ५. श्रीजयनारायणमल्लिक ६. पं० त्रिलोकनाथ मिश्र ७. प्रो० राधाकृष्णचौधरी ८. प्रो० हरिमोहन मिश्र ९. प्रो० प्रबोधनारायण सिंह १०. प्रो० रमेशचन्द्रवर्मा ११. पं० रामकृष्ण झा—'किशुन' १२. श्रीधनेश्वर झा 'किशोर' १३. श्रीश्यामलकिशोर झा १४. श्रीश्यामसुन्दर घोष 'अशान्त' १५. श्रीहरिशंकर प्र० श्रीवास्तव १६. श्रीमायानन्दमिश्र १७. पं० धनुषक्षेत्र झा १८. श्रीबद्रीनारायण झा 'विप्र' १९. प्रो० जगदीशप्रसाद सिंह 'विहल' २०. श्रीविद्याकरकवि २१. श्री जगदीश कवि २२. श्री युगलराम 'प्रेम' २३. श्री योगेश्वर झा २४. पं० योगेश्वर झा (चण्डीरहस्यक रचयिता) २५. पं० सदानन्द झा २६. प्रो० करुणाकुमार झा २७. प्रो० कुमरकिशोर मंडल २८. श्री नन्दकिशोरलाल 'नन्दन' २९. श्री सहदेवलाल दास ३०. प्रो० दयानन्द झा आदि ।

अन्त मे हमर शुभकामना अछि जे 'सहर्षा जिला अपन अतीतक गौरवपूर्ण इतिहास, वर्तमानक प्रगति आ' भविष्यक उच्चाकाँक्षासँ मिथिला तथा भारत-वर्षक इतिहासमे एक विशिष्टस्थान राखत ।

मौलाना अबुल कलाम आजाद

कुमार श्रीवैद्यनाथचौधरी

मौलाना अबुलकलाम आजाद भारतक स्वतंत्रतासं तोस वर्ष पूर्वक इतिहास बनौनिहार व्यक्तिमे सँ एक छलाह । गांधीजी, पटेल, नेहरू तथा जिन्नाक संग ओ राजनैतिक क्षेत्रमे आधिपत्य जमौने छलाह तथा १९४७ मे जे स्व-राज्य प्राप्त भेल ताबत पर्यन्त जे कोनो संग्राम वा संधि संस्थापन भेल ताहिमे ई प्रमुख भाग नेने छलाह ।

युवावस्थामे मौलाना दर्शन तथा धर्मशास्त्रक विद्यार्थी बनि ख्याति लाभ कयने छलाह तथा अन्त धरि विद्वान हयबाक महत्व रखलन्हि । स्वतंत्रताक राष्ट्रिय संग्राम हुनका जीवनक आदिये भागमे अपना दिशि आकर्षित कयलक तथा एक विद्वानकेँ कार्यदत्त व्यक्ति बनौलक । गांधीजी, जनिक संग मौलाना आजाद १९२० सँ कार्य करैत रहलाह, एक बेरि हुनक विषय मे कहने रहथिन्ह 'इस्लाम धर्मक ज्ञान मे त हुनक अतिक्रम क्यो नहि कय सकैत छथि । ओ अरबीक प्रकांड विद्वान छथि । हिनक राष्ट्रियता ततवे प्रखर छन्हि जतबा इस्लाममे विश्वास ।'

मौलानाक विद्वत्ता तथा राष्ट्रियताक संगहि हुनक वाग्मियता तेहेन प्रशस्त छलन्हि जे बड़ सरल रूपमे विद्वान श्रोता तथा राजनैतिक सभा केँ रोमांच कय दैत छल । ओ उर्दूक एक महान वक्ता छलाह, ततवे नहि ई अपन भाषण तथा लेखसँ उर्दू भाषा केँ समृद्ध कयलन्हि ।

कांग्रेसक अग्रगण्य नेता भय ओ पहिले-पहिल १९२३ मे ३१म वर्षक अवस्था मे कांग्रेसक सभापतित्व कयलन्हि । कांग्रेसक इतिहासमे ओ अल्पवयस्कतम सभापति छथि । पुनः १९३० मे ओ सभापति निर्वाचित भेलाह तथा १९४० सं ६ वर्ष धारि निरंतर सभापति रहलाह । हिनके सभापतिकालमे विख्यात " भारत छोड़ू " आन्दोलन भेल ।

आजीवन मौलाना आजाद साम्प्रदायिक राजनीतिकेँ घृणाक दृष्टिये देखलन्हि आर अपन विश्वास जे भारतवासी चाहे जे कोनो धर्मावलंबी होथि, हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख वा ईसाइ सभ केँ एके समाज बनि रहय पड़तन्हि, केँ अटल

रखलन्हि । स्वतंत्रताक दस वर्षे पहिलुका कांग्रेसक मुख्य मुखपात्र बनि तेहेन प्रमुख भाग लेलन्हि जे जिन्ना तत्कालीन मुस्लिमलीगक सरगर्मीमे मौलानाके कांग्रेसक 'प्रदर्शनी' - पुत्रक उपाधि देलखिन्ह । परंतु मौलाना सरल सभद्वतासं एहि पदवीके प्रत्याख्यान कयलन्हि तथा पल्ल सात्रोक निमित्त सम्प्रदायिक राजनीतिज्ञक मिथ्या अपवाद रहितहुँ अपन राष्ट्रियताक आधार सं क्युत नहि भेलाह । स्वतंत्रताक पूर्व तथा पश्चात् पार्टीक सभा सभमे मौलाना आजाद अपन चतुरता तथा पवित्रताक चलैत अन्यतम स्थान रखलन्हि । चाहे जे कोनो स्थान, अध्यक्षक वा कांग्रेसक पार्लियामेन्ट्री परिषदक सदस्य वा पार्टीक अन्यान्य कमिटीमे दिनक बड़ प्रभाव छलन्हि : तीस वर्षसँ अधिकसं अंतिम दिन धरि दिनका जवाहरलाल नेहरूक सौदाद्र श्रद्धा तथा विश्वास प्राप्त छलन्हि ।

दिनक शिक्षामंत्रीकालक दस वर्षक अवधि विद्याक क्षेत्रमे प्राथमिक, आधारिक, वैज्ञानिक तथा माध्यमिक सर्वतोमुखी उन्नतिसं प्रशस्त अछि तथा शिक्षाक निमित्त केन्द्रीय बजट २ करोड़ सं ३० करोड़ हयब एकर प्रमाण थीक । दिनक साहित्यक विषयमे बड़ श्रद्धा रहन्हि तथा दिनके निर्देशनमे तीनटा राष्ट्रिय अकादमीक स्थापना भेल यथा संगीत नाटक अकादमी, साहित्य अकादमी तथा ललित कला अकादमी ।

दिनक शिक्षा - मंत्रित्वसँ भारत, इराक, इरान, जापान इन्डोनेसिया तथा तुर्क प्रभृति देशसँ सांस्कृतिक समझौता कैलक ।

मौलाना अबुल कलाम आजादक जन्म मक्कामे ११ नवम्बर १८८८ मे भेल । अकबर बादशाहक दरबारक लब्धप्रतिष्ठ विद्वान तथा मुल्ला शेख जलाल-उद्दीनक ई वंशधर छलाह । मौलानाक पिता मौलाना मोहम्मद खैरउद्दीन दिल्लीक प्रसिद्ध विद्वान तथा सूफी संत छलाह तथा हुनक शिष्यवर्ग ने केवल दिल्लीमे छलखिन्ह प्रत्युत गुजरात, काठियावाड़, बम्बई आर कलकत्ता आदि स्थाना धरि विस्तृत छलखिन्ह । जखन १८५७ क स्वाधीनता संग्रामक पश्चात् दिल्लीपर अंग्रेज अपन आधिपत्य जमौलन्हि बहुतेक संग खैरउद्दीन मक्का चल गेलाह । बीस वर्ष सँ अधिक समय मक्का तथा इस्ताम्बुलमे जतय दिनक तुर्कक सुल्तानक पृष्ठपोषकता प्राप्त छलन्हि व्यतीत कय खैरउद्दीन मक्कामे तत्कालीन प्रसिद्ध मुल्ला शेख मोहम्मद जहिर बेगक भतीजीसँ विवाह कयला अबुल कलाम ओही विवाहसँ उत्पन्न संतान छलाह तथा अपन बाल्यकाल

अरबमे बितयलन्हि जाधरि १८१८ मे दिनक पिता अंतिमरूपे कलकत्ता आब बसि नहि गेलखिन्ह ।

कलकत्तामे दिनक शिक्षा-दीक्षा विशिष्ट शिक्षक सभ द्वारा भेल । दिनक शिक्षा मे प्रगति आश्चर्यजनक भेल । ई चारिये वर्षक अवधिमे दरस-ए-निजामी, अरबी तथा फारसीक सम्पूर्ण भाषाक्रमसं अवगत भय गेलाह । एकर अतिरिक्त, दर्शन, तर्कशास्त्र, गणित, भूगोल तथा इतिहासमे सेहो पूर्ण योग्यता प्राप्त कय लेलन्हि । एतना लिखै मे नीक विद्यार्थी के दस वर्षक समय लागैत छैक आर साधारण केँ चौदह वर्ष । पन्द्रहम वर्षक अवस्थामे ई कोरानक हाफिज भय गेलाह तथा ओहिपर व्याख्यान देबय लगलाह ।

१८०५ मे अबुलकलाम अपन पिता द्वारा काहिराक अल-अजहर विश्वविद्यालयमे उच्च शिक्षा प्राप्त करैक लेल पठाओल गेलाह । दू वर्ष बाद ई कलकत्ता घुला आर तत्सामयिक बंगालक नवीन राजनैतिक जागृत दिनक प्रभावित कयलक । १८१२ मे ई उर्दूमे एक साप्ताहिक पत्र 'अल-हिलाल' चलौलन्हि, जे स्वल्पे समयमे अपन राष्ट्रिय लेख प्रवृत्तिक निमित्त प्रसिद्ध भय गेल । अबुल कलाम "आजाद"क उपांमसं ओहि पत्रमे लिखैत छलाह ।

आशा

श्रीमतीलक्ष्मीवती 'लीला'

आशा विनु नहि दोसर द्वार ।

आशा क्लेशक मूल ,

हृदय मँह आशा शोकक शूल ,

आशा जीवन सार

आशा केवल कलुषित भार ,

आशा विनु नहि हर्ष

आशा बनए कपट आमर्ष

आशा जगदाधार

आशा वर्ग चतुष्टय सार ।

तएँ ई आशा ! आशा !

केवल रटइत अछि संसार ।

केवल आशा भव सागरसँ

खेबि लगाबए पार ॥

आशा विनु नहि दोसर द्वार ॥ †

ग्रामदेव

श्रीहरेकान्तभा

जग चालि कुकर्मक मध्य आवि
अपता असि के नहि राखि म्यान ।
जन जन के शोणित सँ सिन्दूर
अर्वा शोणित अछि शिखा प्राण ॥

हे हलधर, छी जन गृहधर ?
युग-युग जीवथि धरनी पुट पर ।
वसुधाक सेज जीवन जिनकर
ओ त्यागमूर्ति सेजट मिति पर ॥

दिवा - निशा सहि रौद-ताप
शिशिर-तुदिन सहि रवि प्रकाश ।
सहि युग-युगान्त रहि अन्न मध्य
शाब्दल शशक नहि छाड़ि आस ॥

मधुमास देव, पवनक उच्छास
विरही मन मे शाश्वत सुभास ।
अपना क्षेत्रहि ओ बुभुक्षु स्वर्ग
हे ग्रामदेव अछि नमस्कार ॥

हे ग्रामदेव, अर्चित संदेह
अच्छत-धतुरा अछि दूबि धान ।
प्रकृति देवि, पुजोत्स हेतु
आयल जन-जन सुभगा समान ॥

मिथिलाक आस तिरभुक्ति सत्य
भय गेल शान्त मिथिला महान ।
भए के सदेह पुत्रो विदेह
मिथिलाक मध्य आबु महान ॥

लूसी ग्रै

श्रीशारदादत्तभा 'माधव'

लूसी ग्रै के विषय कतेक बेर
सुनलहुँ निर्जन थल पार करैत ।
किन्तु विहसर अनायास हम,
देखल ओहि गिरिवाला केँ ॥

मित्र हीन ओ संगी रहित छल,
असकर ओ मूर[†] क वासी ।
नर दरवाजा चगै बला मे,
मधुर चीज ओ सभ सँ बेसी ॥

देखब खेलैत नील घास पर
खरहा वा मृग शावक केँ ।
किन्तु पुनः नहि हेरि सकब,
ओइ सुन्दर लूसीक चेहरा केँ ॥

एतै राति अन्धर बिहाड़ि,
पथ दर्शन लय एक लालटेन ।
बर्फ पूर्ण पथ माँ के देखबय,
हे बाता जाऊ शहर एखन ॥

पितुः काज हम करब खुशी ई,
अछि मात्र पहर दू भेल एखन ।
दू के ठोकलक घंटी गिरजा ॐ
छेथि निकलि रहल चन्द्रहि एखन ॥

निज लग्गालय बस चलल पिता,
स्वकार्य, अग्नि लै तोड़य जारन
पूर्ण खुशी संग धुलसित भय,
लूसी चलल उठा लालटेन ॥

अछि ओहन मुदित गिरि शावक नीह
जेहन प्रफुलित भय, ओ पद सँ,
चलल चूर्ण विचूर्ण प्रस्थर केँ,
मिलबैत ओकरा धूआँ सँ ।

† मूर (Moor)-एक वृक्षहीन किन्तु घास सँ भरल मैदान ।

ॐ मोन्सटर ऐक प्रकारक गिरिजा ।

अन्धर आयल पूर्व समय सँ,
लागल भटकय लूसी ओतय ।
कयलक पार पहाड़ी कतिपय,
किन्तु शहर नहि भेटल ओतय ॥

दुःखी माय घाप भरि राति ।
चिकरल जोर, दूर तक जाय ।
किन्तु सहायक देखि कतहु नहि,
छाया वा आवाजे आय ॥

क्रंदन करइत घर दिस घूमल,
कहल 'स्वर्गहिं सभ भेट करब ।'
तावत लूसीक माँ देखल जे
छल बर्फ उपर पद चिन्ह पड़ल ॥

निम्न पहाड़ी गति छल ओकर,
चलल दूहुँ चिन्हक पाछू ।
टूटल बीच होथनक झाड़ी,
टपल दिवाल ओकर संग पाछू ॥

कयलो खेत पुजल एक पार,
छल ओहने रेख बनल चिन्हक ।
सावधान भय पूलं निकट,
आयल ओ पाछू चिन्हक ॥

एक एक सभ चिन्ह निहारत,
कयलक बर्फ पूर्ण तट पार ।
तकथा बीच जहन दूहुँ गेला,
चिन्ह देखल नहि आगू आर ॥

एहनो किछु लोकक अनुभव जे,
जिविते लूसी अछि एखनहुँ ।
देखि सकै छी सभ जन जाकय,
निर्जन मे लूसी के कखनहुँ ॥

ऊमड़ खाभड़ सभहुँ भूमि पर,
आगू जाइछ घुरि नोह देखय ।
असकर गाबय गीत पहाड़ी,
मिलि हवामे ओ गूँजय ॥

मिथिलामे शक्ति-उपासनाक प्रधानताक रहस्य

पं० श्रीश्यामानन्दभा, साहित्यागमपुराणाचार्य, बी ए,

ऐश्वर्यवचनः शक्तिः पराक्रम एव च ।

तत्स्वरूप तयोर्दात्री साशक्तिः परिकीर्तिता ॥

शास्त्रमे ब्रह्मक दु प्रकारक वर्णन अछि, निर्गुण ओ सगुण एवं दूररूपक अव-
तार वर्णन अछि, पुरुष ओ स्त्रीरूपक । जाहिमे निर्गुणक उपासने नाहि हो,
हेतु जे 'उपासना' शब्दक अर्थ सैह 'सन्निधिवास' । निर्गुण रूपे ब्रह्म अणु-
अणुमे व्याप्त अछि ओहीमे हमहूँ सबछी, तखन हुनक उपासना की ? तँ
उपासना हो तँ सगुणक ।

वेद कहैत अछि 'अग्नीषोमीयं जगत्' । सरांश जे बिना प्रकृतिपुरुषे सृष्टिये
नहि, तथा बिना सृष्टिके संसारे नहि । ओ सृष्टि बिना प्रकृतिक सहायता सौं
असम्भव । ब्रह्म तँ जखन एक सौं अनेक हेवाक इच्छा भेलनि, तखन प्रकृ-
तिक सहायता लेलनि । ओहि त्रिगुणात्मिका प्रकृति (शक्ति)क साद्वच्य सौं
संसारक रचना केलनि । एहिक्रमे हम देखैत छी जे संसारमे शक्तियेक
प्राधान्य अछि । आदिकालसौं निर्गुणो रूपमे (तेजो रूपमे) शक्तियेक
आराधना प्रचलित अछि, से यदि नहि होइत तँ आदिऋषि साक्षाद्भगवद्रूप
श्रीनर-नारायण कतहु आदिशक्ति श्रीगायत्रीक उपासना करितथि ? । विश्वा-
मित्र ओही आदिशक्तिक उपासना कय ब्रह्मर्षि पदके प्राप्त केलनि । तँ हेतु
सृष्टिक आदिकालहि सौं संसारमे शक्तिक प्राधान्य रहैत आयल अछि ।
सभ महापुरुष एही वस्तुके सार मानैत आयल छथि, तथा 'बिना शक्तिक
सहयोग सौं ऐहिक ओ पारलौकिक दूनु प्रकारक फल साधन नहि भ सकैत
अछि' इहो निश्चित केने छथि ।

शक्तिक प्रधानताक आर एक रहस्य—स्वयं ब्रह्म (शिव)के ई इच्छा छनि
जे शक्तियेक प्राधान्य संसारमे रहै, हेतु जे से नहि भेने सृष्टिये वन्द, आर
सृष्टि रचने त हुनक प्रधान लक्ष्य । आर देखू—विद्युत् प्रसार जाहि तरहें
जलपर होइछ, ताहिरूपे अग्निपर नहि तखन सोमात्मिका शक्तिक प्राधान्य
बिना विद्युत् सदरा ईश्वरीय शक्तिक पूर्ण विकाश सर्वथा असम्भव, तँ सब-
दिन सौं सभकाल सौं सभ देशमे शक्तिक प्रधानता रहैत आयल अछि, ओ

रहत ई निर्विवाद वस्तु थीक । जाहिठाम सगुण पुरूपक उपासनाक प्रधानता अछि ततहु तँ बिना शक्तिये कल्याण नहि । पहिने सीता तखन राम, पहिने राधा तखन कृष्ण, पहिने गौरी तखन शंकर, तखन एकरा की कही ?

तेँ हेतु मिथिलामे आदिकाल सौँ आइ पर्यन्त शक्तिक प्रधानता रहैत आयल अछि । हमर मिथिला तपोभूमि थीक । नदी ओ कानन सौँ परिपूर्ण अछि—एही सभ कारणेँ त एकर नाम 'तोरभुक्ति' पड़ल । एहिमे बड़-बड़ महापुरुष सभ होइत अयलाह । महापुरुष सभक सिद्धान्तें शक्तिये प्रधान तेँ हेतु मिथिलामे एखनहुँ धरि घर-घरमे कुलदेवता रूपेँ श्रीकाली तारा त्रिपुर-सुन्दरी (इच्छा, क्रिया, ज्ञान, शक्ति)क उपासना प्रचलित अछि ।

मिथिलामे शक्ति - उपासनाक प्राधान्यक आर एक कारण—भक्तपरिपालने त दूनू रूपक (पुरूप ओ स्त्रीरूपक) अवतारक हेतु थीक, ताहिमे जाहिठाम पुरूपक अवतार भेल अछि से कोनो कारण विशेष सौँ यद्यपि माताक गर्भहुँ सौँ अवतर्ण भेलाह अछि, तथापि ओहि प्रान्तमे ओहि पुरूपक उपासनाक अधिकता अछि । मुदा मिथिलामे तँ महाराज जनक (सीरध्वज) यज्ञ करताह ताहि हेतु हर चलौलनि । ओही सिरौड़ि सौँ आदिशक्ति महामाया श्रीसीताजी बालरूपमे सिंहासन पर बैसलि बहरैलीह । महाराज जनकक पुत्री रूपमे लालित भेलीह । जनिका पाबि जनिक उपासना सौँ राजर्षि जनक भोग ओ मोक्ष दूनूक संगहि संग उपभोग केलनि । जतय आबि व्यास तनय ब्रह्मज्ञानी शिशुकदेवोजीक ज्ञान-गुदड़ी हेरा गेलनि ओ लोक द्वय साधनक पाताम्बरो पहिरने गेलाह । ताहि मिथिलामे शक्तिक उपासना त्यागि पुरूपक उपासना करवकेँ यदि मिथिलावासीक अविवेकिता कही त की अत्युक्ति हो ओही शक्तिक अवहेलना सौँ मिथिलाक दुर्दशा भेल ओ पुनः हुनके उपासना सौँ मिथिला 'मिथिला' हेतोइ । एही सब अकास्य कारण कूट सौँ बुझैतछी जे 'मिथिलामे शक्तिक उपासनाक प्रधानता' उचिते थीक !

महिमाक पार अहँक नहि पाओल ब्रह्मादिक कय गान ।

हमहुँ अपन मति सीमित लय शिष कमल करुण आह्वान ॥

— बंभोलाके दरबारमे

स्व० विनोदानन्दभा 'चीनू'

पद्मा ककाक जन्म

भादवक अमावस्याक बारह बजे रात्रिकऽ पद्मा कका डोका सन
आँखि खुाचन सन कान, पीढ़ी सन पीठ नेने पृथिवीपर अवतीर्ण
भेल । ज्योतिषीक गणनामे प्रातः काल देवाक चाही । सात सघवा
बजा, आठ दीप, ईशान सऽ वायव्य, शिरोदेय दक्षिणायन सऽ
उतरायण ।

पद्मा ककाक जन्म-कथा लिखैत काल संदेह भेल जे लोककेँ हेतैक, ई
पित्तोक जन्म कोना देखलक ?

ओ हमर अपन पित्ती नइ छलाह ।

हमर समाजमे, जेकरा सऽ कोनो संबंध नइ, प्रायः जनिकर कन्यो-बहिन सऽ
अधिकार भऽ सकैछ, केकरो काका, केकरो बाबा, केकरो भाइ कहबाक परि-
पाटी परम्परा अछि आ सेहो बड़ प्रबल । जे हमरा भैया कहैए, जिनका जँ
हमर बेटा कका नइ कहतैन तऽ समाज हमर निन्दा करत, बोस ठाँ बाजत ।
जे हमरा प्रणाम करता, तनिका हमर बेटा नइ करतैन तऽ लोक हँसत ।....
ओना तऽ लाल काकी हमरा सोभों ने अबै छली, स्वसुर सूचके शब्द संबोधन
करै छली, कारण हुनक स्वामियेँ हमरा आगूमे कालहुक छाँड़ा छलखिन ।
कोना-कोना जन्म भेलैन, जन्म लितहिँ मैया भऽ गेलैन, कोना ओइ सऽ बक-
सल गेला, कते ठाँ डाली लऽ लऽ कऽ अन्हड़-विहाड़ि रेड़ैत, गाम-गामक
पानि पी, हुनका चेतन बनौलासँ हुनकर माय - बाप जनै छथिन —आब मने
लालकाकी तिलकोड़ा पात छानि - छानि खाथु, मुदा चानिक केश हमरे
टूटलए ।

मैथिलानीकेँ कदाच बीस, बाइस वर्षक अवस्था धरि देखल गेलए जे जँ
संतान नहिजे भेल तऽ परिवार वा समाज चितित रहितौ भरिसक चुप
रहैछ । तेकरा बाद तऽ कबला-पाती, देवता पितर, भाड़ फूक, तंत्र-मंत्र,

जहो यत्र नाह्य ह्य अशुभ थिक ताहूमे जेकरा संतान भैयो कऽ मरि जाइ है। कुत्रिम कऽ तेकरा तऽ कृत्या रहिते छै, कुलदेवताक अप्रसन्नता, आठम मंगलक दृष्टि इत्यादि निश्चिते थिक। एक तऽ कोनो गाम एहन नइ अछि, जइमे दश बीस खेलालि डाइन नइ हो जेकर प्रधान काज रहै छै नवयुवती गणक देहमे बारबार भूत लगैब, परसौतीक बच्चा छीन लेब, धनाढ्यक शरीरमे व्यथा देब, केकरो कोखिए हरण कऽ लेब.....।

हमरो बाबीकेँ दुरागमनेक वर्ष बड़ - बड़ अनिष्ट भेलैन। एक तऽ ग्रह-प्रवेशक काल विलाड़ि बाट काटि देने रहैन, भरल नइहरमे एपर दीतै कियो जोर सऽ छिक्ने छल सेहो नैऋत्ये कोण सऽ कतेबेर घुरारी लग नूआक आँचर जरि गेल रहैन। एक बेर तऽ सद्यहे सीथ लगक लट काटल देखलैन। बाबा यद्यपि संस्कृतक प्रकांड विद्वान रहबाक कारणे एहि सभ शंकाक समाधान कोनो कामरू तंत्र सऽ, कोनो उड्डोस, कोनो शारदा तिलक प्रभृति ग्रंथ सऽ केने जाथि, मुदा बाबीक मोन सबदिन छेगएले रहलैन। सब सऽ वेशी सद-होरिमे आएल पूरीमे साक्षात् आलपीन केँ देखि दुनू व्यक्तिक विश्वास टूट भऽ गेल जे ई सभटा उत्पात बाबाक पीसी कोनटेमे बाल - बिधवा रहबाक कारण बापक कप्पार पर बैस गेल छली, हुनके ई दुष्टता थिक। पूर्व अनेको दिन बाबीक हास्य रूपेँ बाबा ई कहि जे 'अहाँ तऽ पाया पारक थिकौ, आखन धरि भुच्चड़पनी अछिए' पार उतरल छला, मुदा अइ बेरक संदेह केँ संवरण करवामे हुनको अक्षम देखना गेल। वहयिन, हाँकलि डाइनक सभ लक्षण पीसीमे मिलैए—गात्र हाँकव, परवाक हाथे जादू पढ़ब प्रभृति तऽ हुनक वामा हाथक खेल थिक।

बाबी एहि सऽ पूर्व तीन बेर सातु सम्भर बान्हि जीवछ लग त्रिरात्रि बितौने छली। साहस टूट गेल छलैन। कते लोटा जल भद्रकालीकेँ चढ़ा चुकल छली। कतेक छैठमे केराक घौड़, गहवरमे छागर आ घरक गोसांउनिकेँ कतेको आँचर चानी-कौड़ीक कबुला - पाती कऽ चुकल रहथि।

अततोगत्वा एक तांत्रिक फकीर प्रसादेँ जखन हमर पदुआ काका गर्भाशयमे प्रवेश कैलनि तऽ पुनः एक आशाक संचार बाबा-बाबी दुनूक हृदयकेँ किछु कालक हेतु ओत-प्रोत करक चेष्टा कऽ लागल, यद्यपि ई विश्वास जेकाँ छलैन जे जीता तऽ ईहो नइ-जे ऋण धारणे छियैन से सधाबऽ अबै छथि, तथापि

एकांतमे दुनू व्यक्ति कखनो अर्द्ध विकसित कमल जेकाँ प्रस्कृति होइत एक दोसरा केँ पुछथिन आ एक दोसरक शंकाक समाधानो करथिन । बाबा तऽ पुराणक अनेक दृष्टान्त देथिन जे अमुक राजाकेँ सात मृत संतानोपरान्त आठम राजगद्दी पर बसलखिन । नामक कल्पना करवामे की क्षति ? चुल्हाइ वा चुल्हिया, बढन-बढनिया, ठकवा-ठकनी । संस्कार छलैन जे एहि रूपक नाम रखौला सऽ से संतान जीवै छै । प्रथा तऽ कतौ एहनो छै जे मृत-वत्साक बच्चाकेँ चुल्हामे दऽ कऽ बहार कऽ लेल जाइछ, बाढ़नि-खापरि प्रभृति अशुभ वस्तुक सशो करा देल जाइ छै वा दू, तीन, पाँच, छऽ कौड़ीमे ओकरा बेचि देल जाइ छै आ तऽ मुकूले दुकौड़ी, तिनूकौड़ी, पँचकौड़ी, नामो! राखल जाइ छै । ... बाबी गाइक गोबर सऽ सगुन उचारऽ लगली । ई सगुन उबारब ओ अपन साक्षाते ममियौत बहिनक पितियौत ननदि सऽ नइहरमे सिखने छली आ ओ सिखने छली अपन पीसीक कठमामीक दियर सऽ जे बराबरि पहाड़ेमे सखुआक व्यापार करै छथि । ओ कोना-कोना एक घार्मिक सम्पर्कमे आवि गेला, एक रोमांचक कथा अछि । हुनक बाल-वियवा बहिनकेँ लखन एक बेर पिल्ली आ कछवी दुनू भऽ गेलैन, उएह धोइया शोणित बोकरि बोकरि कऽ, पेटमे दाँते काटि-काटि बहुत परिश्रमक बाद छोड़ौने छलैन । आ तऽ तइ डाइनो केँ नइटे नचवक हेतु कमर कसने रहए, मुदा कते लोकक प्रार्थनापर, कारण एक नीक वरक स्त्री देखार भऽ जएत, ओ थम्हि गेला आगि खैव दीपक टेमी चिवैव, झोका लेव..... ई सभ ओकरा संगमे एकटा नरसुंड रहै, तेकरे प्रभाव छल ।

अंतमे

भादवक अमावास्याक बारह बजे रातिकऽ पढ़ुआ काका डोका सन आँखि खुलैन सन कान, पीढ़ी सन पीठ नेने एहि पृथिवीपर अवतीर्ण भेला । व्यातिपीक गणनामे प्रातः काल हेवाक चाही । सात सधवा बजा, आठ दीप, ईरान सऽ वायव्य, शिरोदय दक्षिणायन सऽ उत्तरायण । अस्तु एकर कारण घड़ी नइ; अइमे किछु चमैन प्रभृतियोक अप्र-पश्चात्य भऽ सकैछ । घड़ी तऽ आइ सऽ बास वर्ष पूर्व हुनकर घसकटिमे श्वसुर देने छलखिन आ विश्वास छलै जे तहिया सऽ अद्यावधि शैथिल्य वा चांधैल्य नइ आएल छै ।

ई थिक पढ़ुआ काकाक जन्म । दिनकर नामकरण, पाच, मूड़न, कर्णवेध, उपनयन, विवाह-द्विरागमन तऽ तेहन रोचक अछि जे बुझू कृष्णभोगक चटनी सेहो पुदीनावाला ।

सर्वोदय

पं० श्रीलक्षितमोहनमा

सर्वोदय शब्दका अर्थ जीवमान या मानवके विकास, उदय या कल्याणक
प्रवृत्ति करन तथा एक दोसरके ओढ़ि देत सुखनयन देन एवं समीचीन समाजक
रचना करन 'भीक'। एखन धरि मानव-समाज एक दोसरके प्रेम करिक स्थानमें
मे शोषित कय आपन स्वार्थ, मान या सुख-सुविधाक हेतु विद्या, धन, स्वर्ण,
अर्थ, आदिके संग्रह करन जीवन्त कृत्य सुमानन्दि। फलतः एक विषम-
समाज बनि गेल। एक दोसरके शत्रु बनि शरीर ईर्ष्या, द्वेष, भय एवं
स्वार्थपूर्ण भय युक्त हेतु प्रस्तुत पड़इत छथि तथा ई संसार नर-संहारमे
परिणत भय गेल अछि। नीक-नीक, सुयोग्य, आ' दर्शनीय एवं चिरपूजनीय
विद्वान व वैज्ञानिको एक दोसरके विनाशक मार्ग या चमत् (कुटिल राजनैतिक
के ईशारा पर आपनाके बिसरि) प्रस्तुत करइत रहइत छथि।
केयो खाइलै मरइत अछि तँ कियो खाइत-खाइत मरइत अछि ! ककरो पढ़इक
खर्च नहि तँ केयो धन-भाद सँ उन्मात्त भय पढ़ि नहि रहल अछि ! केयो जाइ मे
फुटपाथ पर राति बितनइत तँ केयो वर्षा मे दूटल गोपड़ीमे गुदा कतेक
राजमहलके बाह्य विशेष आनन्द हेतु हवाई या विदेश-भ्रमण करइत छथि
कतहु दवाईके भंडार अछि तँ केयो औषध बिना तड़प तड़प कय मरइत
अछि ! कतहु वस्त्रक गोदाममे दीवाड़ लगाइत अछि तँ कियो जाइमे बाल-
बच्चाक सहित यस्त्र-विहीन या अभावक कारणे ठुठुरि कय नार-पुआर मे
घुलियै कय राति बितनइत अछि। कतहु राजकीय पथ अछि तँ कतहु लोक
के गामक छेकमे पिछड़िकय व फंसि कय जान गमाण पड़इत छैक एवं गर्मी
मे गरदा फांक या खेत चल पड़इत छैक। उपयुक्त विषमताक फलस्वरूप
समाजमे आइ उथल-पुथलके हेतु क्रान्तिके नाद बहि रहल अछि। कतेक
राजनैतिक दल विशेषके लोक मानव समाजके हिंसक व वैदेशिक मार्गक
क्रान्ति दिश बहका रहल छथि। समाजके अन्य वैदेशिक मार्गपर बहकइत
देखि उत्तरदायी सरकार शान्ति व धैर्य के हेतु शीघ्र वैधानिक रूपे सामाजवादी
ढंगक समाज-रचनाक आश्वासन दय रहल अछि गुदा समाज तैयो दिनानुदिन
अधैर्य व असंतुष्ट भय क्रान्तिक हेतु नेतृत्व के ताकमे अछि।

अस्तु विश्वशान्ति मानव-प्रेम वृद्धि एवं एक सुन्दर व आवर्ण्य वर्गीहीन समाजक रचनाक हेतु महात्मा गांधीजी तथा हुनक महान् अनुयायी संत विनोबाजी विश्वके हृदय परिवर्तन द्वारा कमहि कम 'सर्वोदय समाज' के रचनाक हेतु आम्ह कयत्तनिह अछि । हृदय परिवर्तनक हेतु साधन करब अनिवार्य अछि याहिँकेँ पूर्ति करब लक्ष्य प्राप्ति करक थोक । साधनाक हेतु ककरो घृणा, ईर्ष्या या हेतु दृश्यसँ नहि देखि (अपितु) प्रेम करब प्रथम मूल साधन थीक । शरीर-श्रम द्वारा स्वअर्जित वस्तुसँ निर्वाह करैक अभ्यास तगैव एवं शोषण मनोवृत्तिकेँ त्याज्य करब, धन व स्वर्ण केँ मान समाजमे निर्भीक भय कम करब, आर्थिक समानताक विचारसँ गृहस्थी, उद्योग, व्यापार, विद्याअध्ययन करब तथा अहिंसा, सत्य ब्रह्मचर्य व साखिक भोजनक अत पालन करब, दोसरकेँ वस्तु या धन कोनो प्रकारेँ अपहरण नहि करब सर्वोदय के लक्ष्यपूर्तिक सरल व सुगम साधन थीक 'भूदान' एकर प्रारम्भिक सांस्कृतिक आधार तथा 'पंचशील' राजनैतिक प्रदीप थीक । सर्वोदय विचार मानवके आध्यामिक व वैज्ञानिक फल थीक ।

स्वर्गीय अकल कलाम "आजाद"

श्रीमहारुद्रनाराण भा 'पीड़ित'

जूनि पूछ छला ओ केहेन लोक
धरती केर नव्य प्रसून सरल
ओ छला सहज अद्भुत त्यागी
मानवताकेर उद्दीप्त भाल
जन-जीवनक प्रति दृढ़ अनुरागी

ओ छला जगत केर जाप जोग

जूनि पूछ छला ओ केहेन लोग

जन जीवन दायक स्वच्छ मेघ
धरती पर उदधि रूप धरि कै

जहिना निर्मल अछि करैत भूवन
तहिना ईश्वर केर अंश रूप
लऽइ पाण्डित्यपूर्ण ज्ञमता अनूप
करबैत युग के जगक याद-
"भू" पर अग्रजानेता 'आजाद'।

तजि देल युगक सुख राग भोग
जुनि पूछ छला ओ केहेन लोग
छप्पन कोटि देवो दुर्गाक
ओ छला संकुचित एक रुप
ब्रह्मा विष्णु, शंकर, महेश
पवित्रार्थ अन्यत्र एक कोन भेष
पाबि सत्य शिव सुन्दर समूह

भऽ गेल प्रफुल्लित लोक लोक
जुनि पूछ छला ओ केहेन लोक
जे अछि अमर ओ कोना भरत
अछि मौंटिकतर ओ कोना भरत
किछु दिन माएहिं केर कोरा मे
लऽ शान्ति शक्त निर्मल शरीर

धूमताइ हवा संग करैत भोग
जुनि पूछ छला ओ केहेन लोक
निर्भर मे भरता नव जीवन
पतझड़ केर अशा राग सबल
धूमिल भ्रमजल पर एक बेर
सिहरण दऽ बजता एक बेर
'आजाद' रहि आजाद सतत

लायत जीतन मे सरस योग
जुनि पूछ छला ओ केहेन लोग

ठकन

श्रीमोदनाथका

वायुक स्पर्शसँ गाछक पातक सर-सर हर्षभवनि, धीर अन्धकार देखि सय-
विकम्पित गिगुर सभक रिन-रिन शब्द । निशा यौवनक नशासँ सातकि छल
ई समय बहुतोक हेतु लाभप्रद होइछ । यदि एहि समयक सृजन विद्या
नहि केने रहितथि तँ नहि जानि अभिगारिका सभक अभिसार कहन होइत ।
दिवशाभिसार ! किन्तु एतेक सुलभ ओ निरापद नहि । विद्यापतिक ललितनगर
रोमांचकारी, नायिकाक हीपित भाषनाक दुस्साहससय हृदयस्पर्शी दृश्यक
ई संकलन दृष्टिगोचर नहि होयत । हमरा सभकेँ अभिसारवर्णनक सधुसय
आनन्दक उपभोग करैक एहन सुन्दर संयोग नहि भेटैत । जतय महाकवि
विद्यापतिक अभिसारि भाग भुजग सिर कर अभिनय-कर माँपल फनि-
मनि द प' एहन दुस्साहसपूर्ण कार्य करबाक क्षमता रखैत छलीह, एतेक
दृढ़प्रतिज्ञ ओ छलीह जे 'घर गुरजन डर न मानव वचन चूकब,' नहि
हुनक ढोठपन सेहो एहि सँ देखार होइछ जे यदि नभमे सहस्रो चन्द्र
उगताह तथापि हम अपन सौन्दर्यक प्रतिमाकेँ धवल वसनसँ माँपि अभि-
सार करवे करब । ततय यदि आजुक रातिमे मासो रोगसँ आक्रान्त गोनरि
पर एकाकार पतिक अवहेलना कय मुनरी एक सर्वसम्पन्न सुन्दर युवकक
अंकशायनी भेल हो तँ आश्चर्य कोन ?

कोठलीमे धूमिल हरिअरका शीतल प्रकाश । तथापि माघक रातिमे दुहुक
मुखपर स्वेदविन्दु परिलक्षित होइछ । तदुपरान्ते अलसायल नारी फंठक
क्षीण स्वर एहि शान्त वातावरणकेँ भंग कयलक :

अहाँ तऽ बुझिते ने छियैक ! उँहुँ आव हम नहि आयब !
से कियैक गे ?

आव ओ बड़ दुखित छैक ।

जाय दे !

मुदा ओकरा बाद हम एहि गाम मे रहब कोना ?

अहिना हमरा अतय !

लोक की कहत ?

लोकक मुँह हमरा समझ नहि खुजतैक । गै ! तोँ डेराइत किएक छैँ ?
तऽ हमरा बड़ डर होइत अछि ।
धुर बताहि !

अइवेर गाममे आम नहि फड़ल छल । अतः कलम-गाछीक वैसारी क
आवश्यकता नहि छलैक । तेँ अधिकांश समय मित्र-मण्डलीक संग दरबज्जहि
पर बितैत छल । एक दिन प्रातःकाल शिताहल बाजी सतरंज भुटकुन बाबाक
संग लाधि देने रही । भुटकुन बाबाक शाहकेँ हमर घोड़ा ओ फील किछु
बिकट स्थित उपस्थित कए देने रहन्हि । तेँ हम निश्चन्त भेल दोसर दिस
तकैत रही । ता देखल हमर दरबज्जा दिस एक कंकाल अग्रसर भए रहल
अछि । ठीक ओहने कंकाल जे हम मेडिकल कालेजक 'एकजिविशन' मे
देखने रहियैक । हम विस्मित भेल भुटकुन बाबासँ पुछलियन्हि जे ई के
आवि रहल अछि ? बुझि पड़ल भुटकुन बाबाक हेतु ई कोनो विस्मयजनक
नहि हो । अथवा सतरंजक चालिमे ओकरायल मात्र ओ उत्तर देलैन्हि जे
ठकना ! ई नाम सुनितहिँ देरी हमर आश्चर्य अपन चरमसीमापर पहुँचि
गेल । अन्तरमे विभिन्न प्रश्न हूडि मारय लागल । 'ठकना जिवतहिँ अछि ?
यदि जीवो कयल तँ ओकर ई रूप ? मुनरीक की हाल ? ओ आबहुँ.....?'
ता अत्यन्त क्षीण कम्पित स्वर 'परनाम मालिक' सुनि निश्चित ई शंका भेल
जे चुरैल सभ एहिना बजैत हैत । संयोग नोक छल जे दिन छलैक
नहि तँ हमरा ई दृढ़ विश्वास अछि जे ठकनासँ यदि रातिमे ककरो साक्षात्-
कार होइतैक आओर ओ एना टोकितैक तँ केहनो जिवतगर व्यक्तिक सभ
दशा होयवामे किछु बाँकी नहि रहितैक । हमर ध्यान खेलसँ एकदम हँटि
गेल आओर ठकनापर केन्द्रित भ' गेल ।

ठकना जे सभ गप्प कहलक, क्षीण स्वरेँ, तकरा सुनि हम पूर्ण द्रवित भय
गेलहुँ । ओकर ओ अवस्था छलैक जे ओकरा उठि पर्यन्त ने होइक । ज्वर
सँ ओकर देह जरैत रहैक । माथ ओ देहक दर्दसँ ओ कुदरैत रहैत छल ।
मुदा औषध कोनो प्रबन्ध करव तँ मुनरीक हेतु कोन कथा पिआससँ
छटपटाइत ठकनाकेँ अपन पतिकेँ ओ एक घोंट जल पर्यन्त ने पिआलक ।
यदि संयोग सँ कखनदक कहियो मनगी अंगना आनरा तँ ठकना जे सभ ठकना

अपन कष्ट के सुनेबाक हेतु ओकरा सोर बारैक । परन्तु ओकर कष्ट दूरकरबाक प्रयासक स्थानमे मुनरी अपन सिङ्गार-पटार करबामे व्यवधान पावि लोहखि दस-हज्जार गारि गज्जन करैक ओ कखनहु कँ दू-चारि ठुनका सेदो लगा दैक । ठकना मृत्युक आह्वान करैत दुकुर-दुकुर मात्र तकैत रहि जाय । ओ तँ मंगली मायके धन्य कहो जे ठकनाक वास्तविक माय भए ओकर सदत सेवा-सुश्रूषा केलकैक ।

मृत्युक मुखसँ घीचि तँ अनलकैक मंगली माय । मुदा आव ओकर साध्य नहि छैक जे ठकनाक पथ्य-पानिक व्यवस्था ओ करत । एक तँ ओ अपनहि एहि बुढ़ारी अवस्थामे अपन पेटके कुशओन-पिसाओन क' कँ भरैत अछि । ओ ठकनाक हेतु आहार कतयसँ जुटाओत । तेँ ठकनाकेँ दुखिताह अवस्था सँ विशेष कष्ट आव होइत छैक । दुक्खितमे त वेहोश पड़ल रहैत छल । भूख लगतहिँ ने रहैक । किन्तु आव भूखक ज्वाला ओकर एहि हड्डिओकेँ भस्मीभूत करबापर तत्पर छैक । मुनरी तँ आव घुरिओ क' एकरा अङ्गना नहि अवैत छैक । जँ केओ किछु खेबाक हेतु अन्न दइतो छैक तँ ठकना ओकरा सदुपयोग करबामे असमर्थ रहैछ । तेँ गामहिमे घूमि टहल पेटकेँ भरबाक प्रयत्न करैत अछि । मुदा तथापि कतोक साँझ उपासले रहि जाइत अछि । की करओ ? एक तँ आव भीख देबाक प्रथे उठल जाइछ, दोसर ओकरा सामर्थ कहँ जे दू-चारि अङ्गना भीख माँगत । यदि कहियो क' कोनो दयावान्क ओतय रान्हल भोजन भेटि जाइत छैक तँ ठकना तृप्तिक अनुभव करैछ । अन्यथा भूखक ज्वालासँ संतप्त होइत रहैछ । एंवक्रमे आइ तीन मास सँ निकेँ रहितहुँ ठकनाक शरीर ओहिना हड्डीक ठठर छैक । को एहि हड्डीक ठाठ पर कहियो माँस चढ़तैक ? की ठकनाक हाथमे फेर हरक लागनि देखबाक अवसर आओत ?

जे मुनरीक देह पर ननगिलाटक अठहथी साड़ी घुठ्ठीसँ ऊपरहिँ रहि ओकर सम्पूर्ण शरीरकेँ झँपबामे असमर्थ रहैत छल तकरा नित नवीन फरदी साड़ीमे मुरलीबाबूक आँगन बहाड़ैत देखैत छल । जकर ठोरपर षोड़सीक अरुणिमाक स्थान पर फुफरी पड़ल रहैत छल से अधर आव एक युवतीक अधरकेँ सार्थक करैत छल । ओकर अंग-प्रत्यंगसँ यौवनक सादकता टपकैत छैक ।

किएक ने हो आब ओ मुरलीबाबूक मलिकाइन छल । जिनकर सेवा करवाक निमित्त मुनरी राखलि गेलि छल आब हुनकेपर मुनरीक आदेश चलैछ । भडाइक कुओसँ ल'क सम्पूर्ण आङ्गनमे ओकर आधिपत्य छैक । मुरलीबाबूक रुग्ण पत्नी अपन अठ मासक बेटीक संग फूसक उतरवरिया घरमे सुतैत छथि । आर मुनरी आब पूर्ण ढीठ भय बिना कोनो संकोचे पुरवरिया कोठा मे गद्दीदार कोचपर विश्राम करैत अछि ।

एकटा....!

कह ने की एकटा ? चुप किएक भ' गेले ?

लाज होइत अछि ।

लाज कथिक होइत छौक ?

ऊँह !

तारा हमरे सपत छौक ?

धुर जो !

मुनरी !

.....

मुनरी !

मुनरी अपन मुँहकेँ मुरलीबाबूक वक्त पर रखैत बाजलि जे 'अपन तँ हमरो किछु दिन मे उएह हाल हैत जे मलिकाइन केँ भेलैन्हि अछि । आब हमर की दशा हएत । अहाँ तँ हमरा छोड़िये देव । मुनरी पूर्ण उदास छलि । मुरली बाबू किछुकाल गम्भीर भेल विचारैत रहला । फेर पुछलथिन्ह—कतेक दिनक छौक ?

तीन मासक ।

पुनः किछु सोचि मुरलीबाबू मुनरीकेँ आश्वासन देलथिन्ह—किछु विन्ता नहि कर । सब ठोक भ जेतैक । आइ काल्ह एहन-एहन दबाइ ने बहरायल छैक जे नओ मास क पार भ' जाइत छैक ।

मुनरी काँपि गेल । मुदा ओकर मातृत्व अपन सुलक समस्त पराजित भय गेलैक । गाममे ई चर्चा अगड़ाही जकाँ पसरि गेल जे मुरलीबाबू अपन पत्नीकेँ दबाइ करेबाक हेतु दरभङ्गा ल' जाइत छथिन्ह । सबठाम चर्चा होइक जे अभागलीक दिन फिरलैक । मुदा लोक ई की जानय गेल जे मुरलीबाबूक एहिमे कोनो चालि छैन्हि ।

परन्तु, मनुष्य सोचैत किछु अछि आओर होइत किछु छै न । मुरलीबाबूक योजना सफल नहि भेलन्हि । मुनरी अपन भविष्यक सुखकेँ चिरस्थाय बनैवाक प्रयत्नमे पिअडि गेलि । ओकरा ठकनाक आक्रोश आक्रान्त कय लेलकैक । मुनरी ओहि दवाइक शक्तिकेँ नहि सम्हारि सकल आओर क्रमे क्षीण भेलि गेल । मुरलीबाबू कोनो उपाय उठा नहि रखलैन्हि । परन्तु हुनकर तत्परता मुनरीक पापमय जीवनक रक्षा नहि क' सकल । आओर एक दिन दरभङ्गेमे मुरलीबाबूक मधुमय जीवनक संगिनी मुनरी हुनका शोकसँ संतप्त करैत चल गेलि ।

दशमीक छुट्टीमे गाम गेल रही । रमेशबाबूक दलानपर दुर्गापूजाक अवसर पर नाटकक तैयारीमे सभ गोटे जुटल रही । तावत पोखरिक घाटपर ठकनापर दृष्ट गेल । आव ओकर ओतेक कंकाल सन दयनीय दशा तँ शरीरक नहि रहैक तथापि एखनो धरि ओकर शरीरमे हड्डियेक साम्राज्य रहैक । हम ठकनाक सम्बन्धमे देवाबाबूसँ गप्प करय लगलहुँ । हुनकेसँ ज्ञात भेल जे ठकनाक स्त्री मुनरीक देहावसान कोन रूपेँ भेलैक ।

एतवे नहि जे समाज-ठकनाक जाति भाइ मुनरीपर शासन नहि कय सकल रहय, मुनरीकेँ डाँटि डगटि मुरलीबाबूक पंजासँ छोड़ा नहि सकल, सएह ठकनाक जाति-भाइ सभ मुनरीक मुइलापर ठकनापर विभिन्न प्रकारेँ जोर देलकैक जे तोँ मुनरीक श्राद्ध करहीक । तोहर स्त्री छलौक-विअहुआ स्त्री । लचार ठकना जाति-भाइ सभक अवहेलना कोना करैत । एतबा साहस नहि छलैक । परन्तु श्राद्धक खर्च कोना जुटतैक एहि चिन्तासँ ठकनाक क्षीण शरीर हहरय लागल । मुदा ठकनाक जाति-भाइ सभ जे श्राद्ध मद मे नाम मात्रक खर्च कय ओहि आड़मे भोज खाक हेतु एतेक ने चक्रचालि रचलक जे ठकनाकेँ हारि मानि दू-कट्टा मात्र घड़ाडी केँ बेचय पड़लैक । कोना ने बेचैत ? समाजक आदेश छेलैक ! विअहुआ स्त्रीक श्राद्ध ने छलैक !

बौकू कहाँ ? तो केवल पन्द्रह दिनक हेतु छोड़ि कें गेलाह, ओ
तोरा सदाक हेतु छोड़ि देलकौ । यैह थिकै बदला । आव ओकर
हेतु तोहर कर्तव्य, ओकर मौन साधना, तोहर चीत्कार । ओकर
अडिग आसन, तोहर विशृंखलित दौड़-धूर । यैह थिकै व्यवहार ।
ओकर गमन, तोहर प्रत्यागमन । दूनूमे सामंजस्य कतय । यैह
थिकै संसार ।

सन् सन् सन् राति करैत । गर्मीक लेल ककरो होस नै । अन्धकारो अपन
समस्त कलाक प्रदर्शन आइए कऽ लेन । दिनमे वर्षा भेल छलै । अखण
ऊमस छै । रास्ता चलै योग नै । थाल-खीच । बीच गाछीमे अन्धकारक
देवता केँ भयक कारणेँ भिन-भिन कऽ के भिगुर अपन परिचय दैत रहै ।

तखने—

‘ले एकटा तहूँ ले । तों किएक चुप छें ? अच्छा तहूँ ले । ले ! ले ! बस बस
आब नै । हा हा हा हा.....बौकू...तोरा हेतु सबटा रखने छियौ ।
आब नै ककरो देवै ।’

एक हाथ मे तारक विअति । ओकर फारि-फारि केँ सब गाछकेँ विलहैत छै ।
सभक नाम लऽ लऽ केँ । सकरचिनिआ, नडरा, बरबरिया सब कियौ ले ।
भेलै कि, बौकू चल गेलै । एकरा छोड़ि देलकै । गाम भरि मे कियौ नै कहै, ई
दूनू दू थिक । सबकेँ बुझि परै एकेँ माइ-बापक बेटा केवल भोजन के वास्ते
अपना अपना ओहिठाम आवैत छल । सेहो कहियो कहियो । हाथो धोइत
छल एके ठाम सुखाइतो छलै एकेठाम ।

चन्द्रसल राति । एक बजेक समय । तखने महीस फोलि के धनेसर खरहोरि
लगहक पोखरिपर पहुँचल । मनमे सन्देह बुझि परलै । ततेक डर भेलै
कि घिघिया लागल । तावत जुमि गेलै बौकू, कहलकै-हमरा तों जगेले नै
किएक ? यदि भूत पकड़ि लिता लखन । तहियेटा बौकू रंज भेल रहै ।
आर कहियो नै ।

परुकेँ सालक षात थोकै । धनेसर उजाहिमे माछ मारै ले गेल छल । राति भरि वर्षाक अटूट धारा । कउखन साँस लैक अवकाश नै । परिणाममे धनेसर असक परि गेल । एक सौ चारि डिगरी जर । प्यासपर प्यास । देहमे दर्द । माथमे दर्द ।

ततबे बौकू माथ रगड़ै, पानी दै, ततबे धनेसरक माइसँ पूछै—कखन जर कम होतै ? । आर अपन भूख प्यास तें बिसरिए गेल । एवं प्रकारे बौकू एक राति छूट जागल, दू राति, तीन राति, पूरे पुर नौ दिन नौ राति । डाक्टर कहलकै—बस आब तोरे पार छौ । धनेसरो कहलकै—बौकू, अखन असगरे ई हाल, जखन तोहूँ तखन की ? मगर पता नै बौकूक कान सूतल रहै अथवा जागल ओ बिहाड़ि जकाँ बहिते रहल ।

अन्तमे वरदान भेटलै । सफल भऽ गेल धनेसरक पिताक कथन—बौकू ! धनेसर केँ तों बचे लऽ ।

किछु नै अहाँक धर्म—आर बौकूक ठोर पर मुसकान नाचे लगलै ।

पहुनाइ कि छ मास धरि होइत छैक । दू नै चारि दिन । तकर उपरान्त सुत्कारमे एके टा स्वरक व्यजन अधिक भऽ जैत छै । धनेसर गेल तेँ केवल चारिए दिनक हेतु, परंच पन्द्रह दिन लागि गेलै । पन्द्रह दिन तेँ बहुत थिकै । क्षण मात्रमे युगीय व्यवधानक व्यवस्था विराजमान रहैत छै । ओते पहुनाइ गाममे हैजा । सबसँ पहिने भगवतीक कृपा बौकूपर । गाम श्मशान जकाँ साकाँच आर निस्पन्द ।

धनेसरकेँ पता छलै, हैजा भऽ रहल छै । एक अतीक्रिय छ सूत्र सँ समस्त ग्रामीण क चेतना जगत स्पन्दित छै । बेतारक तार समान एक दोसरक प्रभावक्षेत्रमे अवश्य डोलैत रहैए । आर ओकर सम्पर्क न्यूनाधिक रूपसँ भ्रत्येककेँ भान होइत छै ।

धनेसर बिदा तेँ भेल गाम दिश परंच ओ उल्लास कहाँ ? चलैत काल धोती अमती काँटमे बाझि गेलै । गामक सीमापर एक परिचितकेँ पूछलकै कुशल । ओ कहककै ‘ह.....आब.....कुशले.....बुम्हू ।’ उत्तर मे अन्यमनस्कताक अभिव्यक्ति छलै । ई विरक्तिमय उत्तर हृदयपर चोट कऽ गेलै । कउखन अपना ओहिठामक आशंका से, कउखन बौकू ओतयक सन्देशमे देह भंभना लैत छलै, जेना आब विश्रांतक शीतल समीरक

कम समय छलै संख्या होइ मे । किछु देर बैस जाइ । बिचार कय एक गाछ
तर बैस गेल । जाहिठाम मजरि जैत छै, ओहिठाम टकटकी लागि जैत ।
कते काल बैसल । बिदा भऽ गेल । प्रधान रास्ता छूटि गेलै । आरि भूर पर
हेने चलल । संख्या अपन कुण्ठाचल से परिचय दिशाक रक्तकेँ माँपित-माँपित
भाँपि लेलकै । केवल अंचल मात्र अवशेष छै । अपन दुर्भाग्यक चक्र
रेखा समान टेढ मेढ़ आरिपर अन्धकारमे लहराइत, धनेसर जा रहल
अछि, किन्तु मन छै बौकूक ओहि ठाम । बौकूक दलान पर गेल । दलान
शून्य । आँगन गेल । आँगन शून्य । साइस कऽ निकरलै “बौकू !” किन्तु हा !
‘धनेसर’ ! के कहतै ? उत्तरमे उत्तर भेट लै दू तीन व्यक्तिक मोहरि ।

बौकू वहाँ ? तौ केवल पन्द्रह दिनक हेतु छोड़ि केँ गेलाह, ओ तोरा सदाक
हेतु छोड़ि देलकौ । यैह थिकै बदला । आब ओकर हेतु तोहर कर्तव्य,
ओकर मौन साधना, तोहर चीत्कार । ओकर अद्विग आसन, तोहर विश्रु-
खलित दौड़धूप । यैह थिकै व्यवहार ओकर गमन, तोहर प्रत्यागमन ।
दूनूमे सामंजस्य कतय । यैह थिकै संसार ।

धनेसर केँ जना लरवा पकड़ि लेलकै । आँगन सेँ बहराइयोटा तेजैतै, सेहो
नै पाषाणवत ठाढ़ । एको शब्द किछु कहबो ते करितै, शापित जकाँ मौन ।
सबसँ भारी बात ई कि ओकरा आँखिमे एको बुन्द नोर नै । नोर कतय,
भय संवलित अवसादक ज्वाला से ओकर अन्तः प्रदेशक सरसता जरि केँ
खाक भऽ गेलै ।

बौकूक घर सब हिलैत छै । देवाल खस चाहैत छै । ओकर दुआरि सेहो छग-
गमाइत छै । धनेसर जतय ठाढ़ भेल अछि, ओ आँगनो धस लगलै । हड़बड़ा
के-बाप रे ! ई कि ?

किछु नै, तोरा मानसिक परिस्थिति मे तीव्र खलवली, आर ? तखन अपना
दलान दिश ताकलक ।

संसारमे धनेसर असकरे अछि । बुझियो पड़ैत छै । बौकू सन के कियो नै ।
गामक प्रत्येक परिवार दूनू से उपकृत छल । कोनो दशनामा कार्य तेँ दूनू
चन । असूलक हेतु तैयार । कियो बीमार तेँ सेवा मे प्रस्तुत । कतहु भोज
सहायतामे तत्पर । गाममे कीर्तन, तँ सबसेँ आँगा । कि ? एकाकी धनेसर
नै कऽ सकैत अछि ? नै । बौद्धिक लल पैरक गति मनक उन्माद मध्य तऽ के

बौकू डूबि गेलै । आव ककरा संग जेठ आपाढ़मे धान रोपत, । आर शीत
सँ पहिने ङगहन मे काटत । ककरा संग महींसकक सेवा । कतय घास
कतय स्नान । कतय विनोद वार्ता ।

रनेहसिक्त स्मृतिद आघात प्रतिघात से धनेसरक प्रगतुत अन्तश्चेतना जागृत भ
गेलै । बस आँखि केँ साओन-भादवक घटा घेरि लेलकै । बौकूक दर्शन आव
बहियो हतै ? आव कतय । आँखि भरभर बरिसै लगलै । एहि गुन-धुनमे
जोर सँ पूछलकै बौकू कि दलान पर एक कोन सँ कियो कहलकै—धनेसर
कि हौ ? धनेसर चुप । एकरा कि होइत छै पुनः के जिज्ञासा करतै । कोन
। आवश्यकता छै ।

धनेसर केँ कि पता जे सृष्टिरूपी कविताक एक पंक्तिमे युग-युग सँ शीलता
आर प्रकाश नेने एक वस्तु विराजमान छै जकर नाम थिकै आकाश गंगा,
आर दोसर पंक्तिमे अनन्त काल सँ अतृप्त पिपासा नेने ज्वालाभय एक वस्तु
जकर नाम बड़वानल ।

अनेको राति बीत गेलै । किन्तु धनेसरक आँखि एको पलक हेतु निद्रा देवीक
शिष्टाचारो नै स्वीकार कऽ सकल । आओरो बौकूक संग विदा कऽ देलकै
कउखन उठैत अछि । दू चारि डेग चलल । फेर बैस गेल । पुनः उठल । यैह
क्रम । कोनो अनावश्यक कार्य कऽ रहल अछि । समाजमे ओकरा द्वारा कोनो
असुन्दर व्यवहार होइत छै । धनेसरक ज्ञान वा आज्ञान से ओकरा द्वारा
जड़ताक समर्थन भेल जैत छै । कियो पूछै कि हौ एना किये करैत छ ? तखन
ओकरा बुझि पड़ै कतौ भागि जाइ ओकरा केवल एकान्त चाही, सेहो
किंचित कालक हेतु । समूह सँ विराग । एकान्त सँ लघु मैत्री । तखन कि
चाहैत अछि, एकर उत्तर वैह देत । सावधानक समयमे असावधान । हँसीक
समय मे कानब । बाजैक समय मे मौन । कउखन प्रलाप ।

आइ अपना धोती आर कमीजके रत्ती-रत्ती फारैत अछि । दूनू मुठ्ठी से माथक
केश केँ नोचि रहल अछि । ई देखि कियो कहलकै बौकूक आवाहन, कियो
कहलकै पागल ।

धनेसर कहाँ ? धनेसर कहाँ ? चारुकात हल्ला । सुर्वत्र खोज । खोज किएक ?
विश्रांतिक हेतु । ओह ! ओकरा जीवनमे आव विश्रांतिक शीतल समीरक

स्पर्श कहाँ ? ओकर जीवन मरुभूमिक दुपहरिया, जतय चक्रमकाइत अत्युष्ण ढेरक ढेर बालु ।

कियो हकमैत दौड़ल आबि के कहलकै 'गाछी मे छै' । कोन गाछीमे ? जहाँ ओकर बौकू नुकाएल छै । सभ दौड़ल । कियो लालटेन नेने, कियो टार्च नेने । आइ निविड़ अन्धकारमे कियो लाठिये नेने ।

तावत धनेसर बौकूकेँ एक जामुन गाछक तर सोर पारै छै । वैह गाछ थिकै । जामुन भखवैत काल डारि टुटि गेलै । बौकू खसल बहुत चोट लगलै । किछु देरक बाद कहने रहै—धनेसर आइ त मरिए जैतौ ।

नै बौकू आधा औरदा दऽ के बचा लितियो ।

ओहि गाछक से माँगैत छै—हमर बौकू द दे । तोरा हाथ जोड़ैत छियो, प्रणाम करैत छियो, हमर बौकू देखा दे, बौकू कहाँ ? बौकू..... बौकू..... बौकू..... । ओकरा स्वरमे नैराश्य छलै । दर्द छलै । किन्तु अंतिम स्वर मे दृढ़ता । आइ यदि बौकूक दर्शन होइतै तेँ कृतार्थ भ जैते । जीवन सरिता क ए पार नै ते ओइ पार अवश्य बौकू ।

सब कियो शराबोक नयन सँ निहारि अपन अश्रु, अपशोच विषाद, वेदना, सब केँ बन्धु-बान्धवक जीमा सौपि, जामुनक गाछक जड़िमे शिर पटकि देलक आर नक्षत्र लोक दिशा विदा भऽ गेल ।

वैदेही समिति, दरभंगा द्वारा
आयोजित

अ० भा० मैथिली साहित्य सम्मेलन

क

द्वितीय अधिवेशन

विशेष विवरणक हेतु अग्रिम अंकमे विवरण पढ़ । आइए ५) टाका पठा केँ सम्मेलनक सदस्य बन ।

पता : मंत्री, वैदेही समिति, दरभंगा

मैथिलीक आलोचना-निबन्ध-इतिहास-साहित्य

१. विवेचना	१)	२०. सम्मेलन-साहित्य-समीक्षा	२)
२. मैथिल संस्कृति ओ सभ्यता	२)	२१. परिचय-पात	१॥)
(दूनू भाग)	२)	२२. गद्य-चन्द्रिका	१॥)
३. परिचय-निचय	१)	२३. मैथिली नवीन साहित्य	२)
४. विचारमाला	१॥)	२४. मैथिली साहित्य सुमन	१॥=)
५. मैथिली कुसुमाञ्जलि	१॥)	२५. संस्कृति	२)
६. विद्यापति ठाकुर	१॥=)	२६. कविवर पं० चन्दा झा	१)
७. महाकवि विद्यापति	१)	२७. रामायण शिक्षा	१)
८. प्रेम	॥)	२८. व्यवहार विज्ञान	५)
९. मैथिली गद्यकुसुमाञ्जलि	१॥)	२९. भारतवर्ष	॥=)
१०. गद्य-कुसुम-माला	॥)	३०. चन्द्रकुलप्रशस्ति	१)
११. मैथिली गद्य पुष्पाञ्जलि	१)	३१. मिथिलातत्त्वविमर्श	३॥)
१२. अनुभूति	॥=)	३२. मिथिलाभाषामय इतिहास	५)
१३. कुरुरचालि	॥=)	३३. मिथिला रिपब्लिक	२॥=)
१४. संख्यखद्योतिका	॥)	३४. मैथिली साहित्यक इतिहास	५)
१५. स्त्री-धर्मशिक्षा	१)	३५. मैथिलीसाहित्यक इतिहास	२२॥)
१६. वेदान्त-दीपक	॥)	(अंग्रेजी—दूनू भाग)	
१७. मैथिली गद्यसंग्रह (तृ० भाग)	॥)	३६. मैथिली साहित्यक प्रगति	॥)
१८. वर्णरत्नाकर	५)	३७. मिथिलाक इतिहास	१॥)
१९. रचना-संग्रह	५)	३८. मिथिलामे शिक्षा	१)

मैथिलीक उच्चकोटिक प्रकाशन

१. मैथिली साहित्यक इतिहास	५)	१०. कृष्णजन्म	१॥)
२. मैथिल संस्कृति ओ सभ्यता	२)	११. एकावली परिणय	४)
(दूनू भाग)	२)	१२. चित्रा	२)
३. विवेचना	१)	१३. आत्ममर्यादा	॥)
४. अम्ब-चरित	२)	१४. गीति-माला	=)
५. मिथिलाभाषा प्रकाश	२)	१५. रागतरंगिणी	६)
६. विद्यापति (खगेन्द्रनाथ	१५)	१६. रावणवध-महाकाव्य	१॥)
मजुमदार)	१५)	१७. रचना-संग्रह (प्रथम भाग)	५)
७. मैथिली-गीति-रत्नावली	१॥)	८. परिचय-पात	१॥)
८. मिथिला रामायण	५)	१८. सम्मेलन-साहित्य-समीक्षा	२)
९. मैथिला रामायण	२॥)	२०. मैथिली कुसुमाञ्जलि	१॥)

विना अग्रिम पडवान्सकेँ बी० पी० पी० नहि जाइछ ।

प्राप्तिस्थान : मन्त्रा, वैदेही सीमात. लालबाग दरभंगा ।